इकाई 15 आधुनिक युग में संस्कृत रंगमंच

इकाई की रूपरेखा

15.0 उद्देश्य

15.1 प्रस्तावना

15.2 आधुनिक युग में संस्कृत रंगमंच

15.2.1 वाराणसी, उज्जयिनी, राजस्थान तथा दक्षिण के प्रदेशों में संस्कृत रंगमंच

15.2.2 संस्कृत रंगमंच के लिए समर्पित संस्थायें

15.2.3 सोपानम्–केरल

15.2.4 युवतरंग – राजस्थान

15.2.5 ज्ञानप्रवाह – वाराणसी

15.2.6 कालिदास संस्कृत अकादमी, उज्जैन

15.2.7 सागर विश्वविद्यालय – सागर

15.2.8 राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान (केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय) – वसन्तोत्सव तथा कौमुदी महोत्सव

15.3 सारांश

15.4 शब्दावली

15.5 कुछ उपयोगी पुस्तकें

15.6 बोध/अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

15.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप :

- आधुनिक युग में संस्कृत रंगमंच के विषय में अध्ययन कर सकेंगे।
- भारत देश के विभिन्न नगरों में होने वाली रंगमंचीय गतिविधियों के बारे में जान सकेंगे।
- संस्कृत रंगकर्म के लिए समर्पित संस्थाओं के कार्यों के बारे में परिचित हो सकेंगे।
- केरल, राजस्थान, वाराणसी, उज्जैन, सागर तथा दिल्ली आदि की संस्कृत रंगसंस्थाओं के विषय में ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
- संस्कृत रंगमंच की विशिष्टता एवं आधुनिक युग में इसकी प्रासंगिकता के विषय में अध्ययन कर सकेंगे।

15.1 प्रस्तावना

इससे पूर्व आपने रंगमंच के कतिपय अन्य प्रकारों के विषय में पढ़ा। इसके अन्तर्गत मन्दिरों का संस्कृत रंगमंच, खुला रंगमंच, लोक रंगमंच, व्यापारिक रंगमंच तथा संस्कृत रंगमंच की वैश्विकता के विषय में आपने विस्तृत रूप से जाना।

इस इकाई में आप आधुनिक युग में संस्कृत रंगमंच के विषय के अन्तर्गत वाराणसी, उज्जैन तथा केरल आदि के रंगमंच के विषय में अध्ययन करेंगे। वस्तुतः केरल,

वाराणसी तथा उज्जैन का संस्कृत रंगमंच अत्यधिक सक्रिय एवं लोक–लुभावन रहा है। यहाँ की समृद्ध परम्परा इस बात की साक्षी है कि कला एवं संस्कृति के विकास में संस्कृत रंगमंच की कितनी महती भूमिका है। ये तीनों नगर, कला एवं संस्कृति के लिए सम्पूर्ण विश्व में प्रसिद्ध है। यहाँ रंगमंच एक सहयोगी एवं संश्लिष्ट कला के रूप में अवतरित होता है जो नाट्य लेखन से प्रदर्शन अर्थात् प्रेक्षक तक एक संयुक्त रचनात्मक प्रक्रिया से गुजरकर जीवन्त अभिव्यक्ति माध्यम के रूप में साकार और सार्थक होता है। तदनु संस्कृत रंगकर्म के लिए समर्पित संस्थाओं के विषय में आप जानेंगे। इनमें केरल का सोपान, राजस्थान का युवतरंग, उत्तरप्रदेश का ज्ञानप्रवाह, मध्यप्रदेश का सागर विश्वविद्यालय एवं कालिदास अकादमी तथा दिल्ली का कौमुदी महोत्सव शामिल है। वस्तुतः ये रंगकर्म की संस्थाएँ समर्पित संस्थाएँ हैं। प्राचीन एवं आधुनिक संस्कृत नाटकों के मंचन से लेकर समाज में इन सभी नाटकों के सन्देश को प्रचारित करने का पुनीत कार्य ये सस्थाएँ कर रही हैं।

सागर विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग में तो इसके लिए पृथक् से नाट्य परिषद् की स्थापना की गई है जो इस बात का द्योतक है कि भारत के शिक्षा संस्थान भी इस रंगमंच के लिए समर्पित है। राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान (वर्तमान में केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय) प्रतिवर्ष कौमुदी महोत्सव का आयोजन करता है जिसमें विभिन्न संस्कृत नाटक प्रस्तुत किए जाते हैं तथा जिनका दर्शक वर्ग भी बडे चाव से इन्हें देखता है।

इस प्रकार आधुनिक युग में संस्कृत रंगमंच के विस्तृत इतिहास एवं इसकी कार्यप्रणाली के विषय में आप जानेंगे।

15.2 आधुनिक युग में संस्कृत रंगमंच

रंगमंच के अन्तर्गत जीवों के सम्पूर्ण क्रिया कलापों के स्वरूपों, लेखक के मन में उठे हुए विचारों और कृति के कथ्य, पठन, मनन, निर्देशक, पात्र–चयन, पूर्वाभ्यास, मंच योजना, दर्शक, प्रदर्शन, उद्देश्य, प्रभाव एवं प्रतिक्रियाएँ सभी कुछ समाविष्ट है। इन सभी क्रियाओं के मिश्रित स्वरूप को जो नाम दिया जा सकता है वह है रंगमंच।

संस्कृत का रंगमंच साहित्यिक रंगमंच के साथ–साथ एक लोकमंच भी है। इसका आधार भारतीय पुराकथाएँ और महाकाव्यों से ली गई कथाएँ होती थी। दर्शक नाटकीय तत्त्वों में ज्यादा रुचि न दिखाकर प्रस्तुति पर ध्यान आकर्षित करते थे। संस्कृत रंगमंच सम्पूर्ण भारत में विद्यमान था। यह रंगमंच तो प्रयोग विज्ञान था। संस्कृत नाटकों के प्रायोगिक पक्ष पर तार्लेकर ने विशेष बल दिया है। इन्होंने संगीत, मंचीय विधान व अभिनय पद्धतियों की दृष्टि से नाट्यशास्त्र के प्रायोगिक पक्ष को अत्यधिक सम्बल प्रदान किया। संस्कृत रंगमंच कुडियाट्टम् का भी इन्होंने विशेष अध्ययन किया है।

वस्तुतः रंगमंच के लिए संस्कृत में नाट्य शब्द प्रयुक्त हुआ है। संस्कृत रंगमंच का तात्पर्य यह है कि किसी भी भाषा का नाटक इसमें अभिनीत हो सकता है, चाहे वह मूल संस्कृत नाटक हो, संस्कृत से अन्य भाषाओं में अनूदित हो अथवा चाहे अन्य भाषा का। हमें इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि संस्कृत रंगमंच केवल संस्कृत के नाटकों के लिए ही नहीं है तभी हम आधुनिक युग में इसकी प्रासंगिकता के विषय में जन–जन को बता सकेंगे।

आधुनिक युग में संस्कृत रंगमंच तो सत्रहवीं शताब्दी से ही अनवरत गतिमान् है। उस समय संस्कृत नाटक पारसी रंगमंच अथवा यथार्थवादी रंगमंच के साये में ही खेले जाते थे। संस्कृत के डायलॉग अर्थात् संवाद भी इसी रंगमंच के नियम के अनुसार बोले जाते थे। संस्कृत के नाटकों का प्रान्तीय भाषाओं में मंचन इस समय की प्रबल माँग थी। 1945 में प्रसिद्ध रंग निर्देशक बेताब ने अभिज्ञान शाकुन्तल का अनुवाद हिन्दी में प्रस्तुत किया तथा इस नाटक में प्रसिद्ध अभिनेता पृथ्वीराज कपूर ने दुष्यन्त का अभिनय कर सबको चकित कर दिया था। इसके बाद संस्कृत नाटकों का मंचन उर्दू, फारसी, मराठी, बंगला, हिन्दुस्तानी, कन्नड़ तथा मलयालम आदि भाषाओं में होने लगा। कलकत्ता की विद्यातोषिणी नामक संस्था ने विक्रमोर्वशीय, रत्नावली, मालविकाग्निमित्र तथा अभिज्ञान–शाकुन्तल नाटकों का मंचन बंगला में किया। संस्कृत जगत् में यह अभूतपूर्व घटना थी। इस क्रम में 1970 में संगीत नाटक अकादमी द्वारा आयोजित एक विचार गोष्ठी में संस्कृत के पारम्परिक विद्वान् एवं आधुनिक रंगमंच के शीर्षस्थ एवं प्रसिद्ध रंगकर्मियों के मध्य विमर्श हुआ कि संस्कृत नाटकों का मंचन भरतसम्मत रंगमंच पर आधुनिकता के साथ हो जिससे जनता संस्कृत नाटकों में निहित तत्त्व को समझ सके एवं उसका आनन्द ले सकें। इसके फलस्वरूप उज्जैन में कालिदास अकादमी के निर्देशन में अनेक संस्कृत नाटकों का संस्कृत रंगमंच पर मंचन हुआ। जिनमें हबीब तनवीर, कमलेशदत्त त्रिपाठी, रेवाप्रसाद द्विवेदी तथा प्रेमलता शर्मा आदि ने इन नाटकों को सफल बनाया। 1980 के आस–पास ये संस्कृत नाटक रंगमंचीय विधि–विधान से खेले जाने लगे। इसी सन्दर्भ में केरल रंगमंच के प्रसिद्ध निर्देशक कवालम नारायण पणिक्कर तथा कमलेशदत्त त्रिपाठी ने मिलकर कुडियाट्टम शैली में विक्रमोर्वशीय नाटक के चतुर्थ अंक का मंचन किया। यह प्रयोग जनता को पसन्द आया। तभी से संस्कृत रंगमंच का सिलसिला अनवरत चलता रहा। इससे पूर्व 1978 में पणिक्कर ने मध्यम–व्यायोग नामक नाटक को कालिदास अकादमी, उज्जैन में प्रस्तुत किया जो विश्व के इतिहास की घटना बन गया। इससे पूर्व 16 नवम्बर 1958 में संस्कृत के प्रसिद्ध विद्वान् वी.राघवन ने **संस्कृत रंग** नामक स्वयं की संस्था के बैनर तले अपनी शिष्या जानकी के साथ अनेक संस्कृत नाटकों का मंचन करवाया। संस्कृत रंगमंच के माध्यम से भारत की सांस्कृतिक विरासत को सामने लाना ही इस संस्था का मुख्य उद्देश्य था। 1958 में **मालविकाग्निमित्र** का प्रदर्शन अखिल भारतीय कालिदास समारोह में करना इस संस्था का महत्वपूर्ण योगदान रहा। **मत्तविलास–प्रहसन** को कुडियाट्टम शैली में प्रस्तुत कर नाट्यधर्मी परम्परा के आलोक में प्रस्तुत कर इस संस्था ने संस्कृत रंगमंच जगत् में धूम मचा दी। **आश्चर्य–चूड़ामणि** का मंचन भी वी. राघवन के निर्देशन में हुआ। भरतनाट्य तथा कल्याणी राग शैली में **अनारकली** का मंचन भी अभूतपूर्व घटना रही। वी.राघवन ने अपनी शिष्या जानकी के साथ अनेक संस्कृत नाटकों का मंचन कर संस्कृत रंगमंच को मुख्य धारा से जोड़ा। अभी वर्तमान में इनकी पुत्री नन्दिनी रमणी इस कार्य को सम्भाल रही है।

विजया मेहता ने भी संस्कृत रंगमंच को नूतन दिशा प्रदान की। अनेक संस्कृत नाटकों का ब्राह्मण सभा, मुम्बई के द्वारा मराठी में प्रस्तुतीकरण एवं मंचन कर प्रस्तुत किया। मुद्राराक्षस तथा अभिज्ञान शाकुन्तल का मराठी परम्परा के अनुसार भरत सम्मत नाट्य–मण्डप के विधि–विधान से प्रस्तुतीकरण इनकी विशेषता रही है।

हिन्दू एसोसिएशन, गोवा द्वारा भी मूल भाषा संस्कृत के साथ संस्कृत नाटकों का मंचन किया गया। इन नाटकों में चेतना दृष्टि तथा जीवन–बोध के साथ–साथ नाट्यसम्मत रंगमंच एवं अभिनय विधियों का प्रयोग मुख्य रहा।

मणिपुरी नाट्य के प्रख्यात निर्देशक रतन थियेम ने भी संस्कृत नाटकों का मंचन मणिपुरी शैली में किया। **ऊरुभंग** का प्रदर्शन तथा कर्णभार की प्रस्तुति इनके प्रमुख नाटकीय कार्यों में रही। ऋतुसंहार का मंचन भी मणिपुरी शैली में इनके द्वारा किया गया। छत्तीसगढ़ की **नाचा शैली** में हबीब तनवीर ने संस्कृत रंगमंच को नई दिशा प्रदान की। मृच्छकटिक का मिट्टी की गाड़ी के नाम से मंचन इन्होंने किया। उत्तररामचरित का भी संस्कृत रंगमंच पर मंचन सफल प्रयोग रहा। इसी क्रम में राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय में शान्ता गाँधी एवं रूपा गांगुली के निर्देशकत्व में अनेक संस्कृत नाटकों का मंचन हुआ। मध्यमव्यायोग, ऊरुभंग, मुद्राराक्षस, भगवदज्जुक का हिन्दी में मंचन दिया।

गोवर्धन पांचाल ने दूतकाव्य का निर्देशन एवं मंचन कर संस्कृत रंगमंच में अभूतपूर्व योगदान किया। सूर्यमोहन कुलश्रेष्ठ तथा कमल वशिष्ठ जैसे प्रतिष्ठित नाटककारों ने संस्कृत रंगमंच को नई ऊँचाई प्रदान की।

15.2.1 वाराणसी, उज्जयिनी, राजस्थान तथा दक्षिण के प्रदेशों में संस्कृत रंगमंच

भारत एक सांस्कृतिक देश है। यहाँ की मिट्टी में संस्कृति ने अपना डेरा डाल रखा है। इसके कोने–कोने से संस्कृति की सुगन्ध आती रहती है। इसके प्रत्येक राज्य में अलग–अलग संस्कृति के फलस्वरूप भी विविधता में अखण्डता का पाठ प्रत्येक भारतीय को स्मरण रहता है। इसी सांस्कृतिक विरासत का मुख्य अंग है – संस्कृत रंगमंच। संस्कृत रंगमंच के बीज हर जगह व्याप्त है। इसकी झलक अनेक लोक रंगमंचों पर देखी जाती है। वाराणसी, उज्जयिनी, केरल तथा तमिलनाडु आदि स्थानों में इसके भरपूर दर्शन होते हैं।

वाराणसी हमारी सांस्कृतिक विरासत है। गंगा के अविरल प्रवाह के ऑचल में रचा बसा यह शहर अपने अन्तस् में ज्ञान–रश्मियों को रखता है। यहाँ अनेक नाट्यमण्डलियाँ सक्रिय रूप से नाटकों के मंचन के माध्यम से जनता का मनोरंजन कर रही है। जिनमें कवितावर्द्धिनी सभा, नेशनल थियेटर, जैन नाटक मण्डली, अग्रवाल बॉयज ड्रामैटिक क्लब, सेन्ट्रल हिन्दू कॉलेज, श्री नागरी नाट्यकला संगीत प्रवर्तक मण्डली, भारतेन्दु नाटक मण्डली आदि प्रमुख है। भारतेन्दु नाटक मण्डली में **सौभद्रहरण** नामक नाटक खेला गया जिसे गोविन्द शास्त्री दुगवेकर ने अनूदित किया था। अंग्रेज दर्शकों की सुविधा के लिए इस नाटक का अंग्रेजी अनुवाद किया गया।

वस्तुतः वाराणसी में प्रशिक्षित नाट्यकर्मी, कलाविलासी नागरिक, राजन्य और श्रेष्ठि वर्ग का धन ऐश्वर्य, बड़े–बड़े प्रासादों के प्रांगण और विशाल मन्दिरों के नाट्य–मण्डप नाट्य प्रयोक्ताओं को सहज–सुलभ थे जिससे वे निश्चिन्त होकर धीरललित नायकों और मुग्धा नायिकाओं को अनेकानेक भावों से भावित करते हुए शरीर, मन और बुद्धि से आरम्भ होने वाले अनुभवों के सहारे आहार्य, आंगिक, वाचिक और सात्त्विक अभिनयों द्वारा इस सृष्टि कर विदग्ध प्रेक्षकों को उसमें आकण्ठ निमज्जित कर देते थे।

पं. शीतलाप्रसाद त्रिपाठी ने रामचरितमानस के आधार पर जानकी मंगल नाटक लिखकर संस्कृत रंगमंच का सम्वर्द्धन किया। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने संस्कृत भाण लिखकर **विषस्य विषमौषधम्** संस्कृत रंगमंच जगत् में तहलका मचा दिया। **चौरपंचाशिका** के यतीन्द्रमोहन ठाकुर कृत बांगला संस्करण का हिन्दी अनुवाद **विद्यासुन्दर** नाम से कर इसका मंचन भी भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने किया। इसी प्रकार

''प्रबोध–चन्द्रोदय'' के तृतीय अंक का अनुवाद **''पाखण्डविडम्बन''** नाम से कर इसका भी रंगमंच पर अभिनय सम्पादित हुआ।

इस प्रकार उज्जैन भी हमारी सांस्कृतिक विरासत का अभिन्न अंग है। यहाँ कालिदास अकादमी ने संस्कृत रंगमंच की दिशा में अभूतपूर्व कार्य किया है। मालवा की माच शैली के साथ संस्कृत नाटकों के प्रयोग लोकविधा की प्रासंगिकता को बरकरार रखने में माहिर है। इस अकादमी ने संस्कृत रंगमंच की दिशा में प्रशंसनीय कार्य किया है। मध्यप्रदेश शासन के सहयोग से 1977 में स्थापित यह अकादमी शास्त्रीय रंगमंच, शास्त्रीय साहित्य एवं विभिन्न कला–परम्पराओं के गहन अध्ययन, शोध अनुशीलन, प्रकाशन एवं प्रयोग के सक्रिय केन्द्र के रूप में कार्यरत है। वोलोस (Volas) थियेटर समूह के द्वारा ग्रीक भाषा में अभिज्ञान–शाकुन्तल का मंचन 1986 में होना इसकी प्रसिद्धि का परिचायक है। वासेदा (Waseda) नाटक कम्पनी टोक्यो द्वारा जापानी भाषा में 20 नवम्बर, 1988 को कालिदास समारोह के अन्तर्गत अविमारक का प्रदर्शन भी इसकी प्रसिद्धि का प्रबल प्रमाण है। अब तक यह अकादमी अनेक संस्कृत नाटकों का मंचन करवा चुकी है।

राजस्थान में संस्कृत रंगमंच के लिए झालावाड़, उदयपुर, जयपुर, जोधपुर, नागौर तथा अलवर आदि प्रसिद्ध रहे। इनके अलावा राजस्थान विश्वविद्यालय का संस्कृत विभाग, केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, जयपुर परिसर तथा महाराज संस्कृत कॉलेज, जयपुर भी अग्रणी रहे। झालावाड़ की नाट्य संस्था की स्थापना सर भवानी सिंह ने की। जयपुर में जवाहर कला केन्द्र, रवीन्द्र रंगमंच, महाराज संस्कृत कॉलेज तथा केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, जयपुर परिसर में अनेक संस्कृत नाटकों का मंचन हुआ।

रवीन्द्र रंगमंच 1963 में स्थापित हुआ। राजधानी जयपुर में नृत्य, नाटक एवं संगीत कला के पोषण व संवर्द्धन हेतु अभूतपूर्व कार्य किया गया। अभिनय के क्षेत्र में रवीन्द्र मंच पर रंगकर्म से अभिनय की शुरुआत करने वाले कई रंगकर्मियों ने सिनेजगत एवं अन्य कला क्षेत्रों में राजस्थान एवं रवीन्द्र मंच का नाम राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय पर गौरवान्वित किया है।

जयपुर के महाराजा रामसिंह (द्वितीय) (1835–1880 ई.) ने अपने शासनकाल में एक नाटकघर बनवाया, जो **रामप्रकाश टाकीज** के नाम बहुत प्रसिद्ध हुआ। इस नाट्यशाला में अनेक संस्कृत नाटक खेले गए। इससे पूर्व भी आमेर के राजा मानसिंह (1589–1614) ने अपने दरबारी कवि मोहन से **दमन–मंजरी** नामक नाटक लिखवाया, जिसका मंचन आमेर के राजप्रासादों में किया गया। इसके बाद रामसिंह प्रथम (1667–1668) ने कवि **विश्वनाथ चित्रापरण रानाडे** से **शृंगार नाटिका** का प्रणयन करवाया तथा इसका मंचन भी हुआ। महाराजा सवाई जयसिंह (1700–1743) ने आमेर के जयगढ़ दुर्ग में रंगमंच का निर्माण करवाया था। 1831 में महाराज संस्कृत कॉलेज, जयपुर के छात्रों ने **उत्तर–रामचरित** का अभिनय किया। महाराजा मानसिंह ने इस अभिनय की भूरि–भूरि प्रशंसा की थी। इस नाटक में चन्द्रकेतु का अभिनय जयपुर के विख्यात संस्कृत मनीषी पण्डित मोतीलाल शास्त्री ने किया। इस नाटक के लिए पण्डित प्रभुनारायण शर्मा ''सहृदय'' को नाट्याचार्य की उपाधि से विभूषित किया गया।

जवाहर कला केन्द्र, जयपुर कला एवं संस्कृति का उच्च अध्ययन केन्द्र है। इसे राजस्थान सरकार ने राजस्थानी कला एवं शिल्प के संरक्षण के उद्देश्य से बनवाया था। चार्ल्स कोरिया द्वारा 1992 में संस्थापित यह केन्द्र संस्कृत रंगमंच का प्रमुख केन्द्र रहा है। इसमें ओपन थियेटर भी है। इसमें भी शताधिक संस्कृत नाटकों का मंचन हो

चुका है। डॉ. हरिराम आचार्य ने बीस से अधिक संस्कृत नाटकों का मंचन यहाँ किया तथा अनेक नाटकों का निर्देशन भी किया। राजस्थान संस्कृत अकादमी, जयपुर ने भी इस दिशा में सराहनीय कार्य किया। इस संस्था के अन्तर्गत सौ से अधिक संस्कृत नाटकों का मंचन अभी तक हो चुका है।

इस दिशा में केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय (राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान) जयपुर परिसर, जयपुर का भी अप्रतिम योगदान है। प्रसिद्ध नाट्य निर्देशक प्रो. रमाकान्त पाण्डेय के नेतृत्व में पचास से अधिक संस्कृत नाटकों का मंचन विश्वविद्यालय के हिन्द केसरी सभागार में, रवीन्द्र मंच पर, जवाहर कला केन्द्र में तथा नई दिल्ली के कौमुदी महोत्सव में हो चुका है। जिनमें वेणीसंहार, अभिज्ञान शाकुन्तल, लटकमेलक, स्नुषा विजय इत्यादि शामिल है। प्रो. पाण्डेय की प्रेरणा से चालीस से अधिक संस्कृत छात्रों ने मिलकर युव तरंग संस्कृत नाट्य दल का गठन किया है, जिसका कार्यभार दीपक भारद्वाज देख रहे हैं। जिनमें संदीप शर्मा, फिरोज खान तथा राधावल्लभ शर्मा मुख्य हैं। इसके अतिरिक्त भी **पारम्परिक नाट्य संस्था, जयपुर** द्वारा भी संस्कृत नाटकों की प्रस्तुतियाँ की गई है। संस्कृत रंगमंच के लिए ये प्रस्तुतियाँ वास्तविक धरातल तैयार करती है। अनिल मारवाडी, सर्वेश व्यास जैसे उम्दा नाट्य रंगकर्मी इस रंगमंच के लिए सर्वथा समर्पित रहे हैं। सर्वेश व्यास ने संस्कृत नाटकों का निर्देशन भी किया है। संस्कृत से अनूदित पाँच से अधिक नाटकों में इन्होंने अभिनय भी किया है। इनके अभिनय की छाप न केवल राजस्थान में अपितु सम्पूर्ण भारत में पड़ रही है। अनिल मारवाड़ी ने वेणीसंहार का निर्देशन किया। इसमें मुख्य सहयोग दीपक भारद्वाज का रहा। रवीन्द्र मंच पर रंग बताशे समारोह में यह प्रस्तुति उल्लेखनीय रही। मारवाड़ी ने ''शकुन्तलोपाख्यान'' का बेले के रूप में भी सफल मंचन किया। यह कार्यक्रम मोदी विश्वविद्यालय, लक्ष्मणगढ़ (सीकर, राजस्थान) के स्थापना दिवस समारोह के अन्तर्गत हुआ।

टाउन हॉल, जोधपुर भी रंगमंच के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ पर भी अनेक संस्कृत नाटकों का मंचन हो चुका है।

दक्षिण के प्रदेशों में कर्नाटक, तमिलनाडु, केरल तथा आन्ध्रप्रदेश शामिल है। इन राज्यों में संस्कृत रंगमंच पूर्णता से भरपूर रहा है। कर्नाटक की यक्षगान शैली का मुख्य स्रोत संस्कृत रंगमंच ही है। यह यक्षगान नाट्यशास्त्र तथा अभिनयदर्पण के सिद्धान्तों पर आधारित है।

इस यक्षगान के मूल रूप में कविता के गायन के तरीके, संगीत की धुन, लय और नृत्य तकनीक शामिल है। कर्नाटक में कर्नाटक संगीत के साथ–साथ संस्कृत रंगमंच भी खूब फला–फूला। उडुपी के मन्दिरों में, शृंगेरी शारदा पीठ में तथा बंगलूरु स्थित संस्थाओं में इस रंगमंच पर अनेक संस्कृत नाटक खेले गए। शृंगेरी स्थित केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय के श्री राजीव गाँधी परिसर में भी प्रत्येक वर्ष संस्कृत नाटकों का मंचन होना संस्कृत रंगमंच की दिशा में सार्थक प्रयास है। यहाँ के छात्रों ने जी–तोड़ मेहनत कर रंगमंच के संसार को सुनहरा कर दिया है। अभिनय, संवाद अदायगी एवं मंच सज्जा में ये अग्रगण्य हैं। भगवदज्जुक जैसे संस्कृत नाटकों का मंचन इसी बात को द्योतित करता है कि संस्कृत रंगमंच के प्रति ये कितने समर्पित हैं। दिल्ली में होने वाले कौमुदी महोत्सव में भी इन्होंने अपने अभिनय की छाप छोड़ी है। यक्षगान शैली से मिश्रित इन संस्कृत नाटकों के प्रति दर्शक मुग्धभाव प्रदर्शित करते हैं।

केरल का संस्कृत रंगमंच अत्यन्त सक्रिय रहा है। कला के इस प्रदेश में सांस्कृतिक विचार–विनिमय बहुत वर्षों से होता आया है। कुडियाट्टम शैली पूर्णतः संस्कृत रंगमंच पर ही आश्रित है। कथकली अर्थात् कथा (कहानी) और कली (प्रदर्शन) भी 500 साल पुराना रूप है। यह मालाबार, कोचीन और त्रावणकोर के आस–पास प्रचलित नृत्य शैली है। **थिरयट्टम**, **पढ़यनि, तेय्यम** तथा **ओट्टंथुल्लल** केरल की प्रदर्शनकारी कलाएँ हैं। इन सभी का मूल संस्कृत रंगमंच ही है। अनेक संस्थाएँ इस रंगमंच के प्रति अगाध श्रद्धा एवं कर्म कौशल से कार्य रह रही है। **सोपानम्** नामक संस्था कवलम नारायण पणिक्कर के निर्देशन में काम कर रही है। भास एवं कालिदास के नाटकों को संस्कृत एवं मलयालम भाषा में प्रस्तुत करने का बेजोड़ कार्य यह संस्था कर रही है। इसके साथ–साथ केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, गुरुवायुर परिसर, गुरुवायुर का भी योगदान अविस्मरणीय है। यहाँ के छात्रों ने अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अपने अभिनय की धूम मचाई है।

तमिलनाडु का लोकनृत्य तेरुक्कुत्तु अत्यन्त लोकप्रिय एवं संस्कृत रंगमंच से अनुप्राणित है। सड़क पर किये जाने वाला यह नाट्य द्रोपदी अम्मा के वार्षिक मन्दिर के उत्सव के समय किया जाता है। चेन्नई की **कलाक्षेत्र** नामक संस्था इस दिशा में सराहनीय कार्य रह रही है। 1936 में स्थापित यह संस्था अब तक 50 से अधिक संस्कृत नाटकों का मंचन कर चुकी है। ''भरतनाट्यम्'' नृत्य तो सम्पूर्ण रूप से नाट्यशास्त्र पर ही आधारित है। चेरी, अंगहार, हस्ताभिनय एवं वाचिकाभिनय से सम्पूर्ण रूप से सुसज्जित यह नृत्य संस्कृत रंगमंच का एक विस्तृत फलक है। **ई. कृष्णा अय्यर** ने इसे वैश्विक धरातल पर पहुँचाया। इसे अग्नि नृत्य भी कहा जाता है। चेन्नई अर्थात् मद्रास संस्कृत कॉलेज में भी संस्कृत नाटक की प्राचीन परम्परा रही है।

आन्ध्रप्रदेश में प्राचीन काल से रंगमंच के विविध रूप प्रचलित है जिनमें बुर्रकथा, हरिकथा, विधिनाटकम्, कोलाटम्, नाटक, कलापम तथा तोलुबोम्मलाट शामिल है। कूचिपुड़ी यहाँ का प्रसिद्ध नृत्य है। इस नृत्य के साथ संस्कृत रंगमंच के स्वरूप को मिलाकर अनेक नाटक प्रदर्शित किए गये। यहाँ के प्रसिद्ध कलाकारों ने भी संस्कृत रंगमंच की प्रतिष्ठा के लिए भरसक प्रयास किया। राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, तिरुपति के छात्रों ने प्रत्येक वर्ष संस्कृत नाटकों का मंचन कर सम्पूर्ण देश में इस रंगमंच का परचम लहराया है। पिछले 25 वर्षों से अनवरत संस्कृत नाटकों का मंचन इस दिशा में महत्वपूर्ण पड़ाव है। तिरुपति का यह संस्कृत रंगमंच विश्वविद्यालय एवं तिरुमाला देवस्थान विभाग के अन्तर्गत कार्य करता है। इस प्रकार दक्षिण के प्रदेशों में संस्कृत रंगमंच खूब प्रचलित हुआ और निरन्तर इस कार्य में सक्रिय है।

15.2.2 संस्कृत रंगमंच के लिए समर्पित संस्थायें

संस्कृत रंगमंच का क्षेत्र अत्यन्त व्यापक होने के कारण न केवल भारत में अपितु सम्पूर्ण विश्व में इसके लिए समर्पित संस्थायें कार्य कर रही हैं। उत्तरप्रदेश, राजस्थान, हरियाणा, गुजरात, असम, बिहार, झारखण्ड, गोवा, दक्षिण के प्रदेश तथा मध्यप्रदेश इनमें मुख्य है। हिन्दी रंगमंच एवं विदेशी भाषा के रंगमंच भी संस्कृत के लिए समर्पित रहे हैं। संस्कृत नाटकों का हिन्दी एवं अन्य भाषाओं में अनुवाद कर रंगमंच पर प्रस्तुत करना भी संस्कृत रंगमंच का ही विस्तार है। उत्तरप्रदेश में वाराणसी, प्रयाग, लखनऊ तथा अयोध्या में विभिन्न संस्थाएँ इस दिशा में काम कर रही हैं।

ज्ञानप्रवाह – वाराणसी, केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय का लखनऊ परिसर, केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय का प्रयाग परिसर तथा अयोध्या में तुलसी शोध संस्थान आदि संस्थाओं के माध्यम से अनेक संस्कृत नाटकों अथवा संस्कृत नाटकों का हिन्दी में अनुवाद कर मंचन हुआ है। लखनऊ परिसर द्वारा अब तक 20 से अधिक संस्कृत नाटकों का मंचन हो गया है, जिनमें **जागरूको भव, दूतवाक्य, मध्यमव्यायोग, हास्यचूड़ामणि, मालतीमाधव (1–3 अंक)** तथा **मदनमोहनमालवीयकीर्तिमंजरी** नाटक इत्यादि का मंचन राष्ट्रीय स्तर पर नई, दिल्ली में हो चुका है। प्रो. रामलखन पाण्डेय तथा डॉ. नीरज तिवारी इस कार्य को भलीभाँति कर रहे हैं। वहीं इलाहाबाद स्थित केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय के गंगानाथ झा परिसर द्वारा धूर्तसमागम, गौरीदिगम्बर प्रहसन तथा इन्द्रजाल आदि नाटकों का मंचन प्रो. कविवर जनार्दन प्रसाद पाण्डेय ''मणि'' के नेतृत्व में सम्पन्न हुआ।

राजस्थान में जयपुर, जोधपुर, बीकानेर, भरतपुर, कोटा तथा भीलवाड़ा आदि स्थानों पर संस्कृत रंगमंच के लिए समर्पित संस्थाएँ कार्य रह रही हैं। जयपुर में रवीन्द्र मंच पर राजस्थान संस्कृत अकादमी तथा केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, जयपुर परिसर के द्वारा पाँच से अधिक संस्कृत नाटकों का मंचन किया गया जिनमें वेणीसंहार तथा लटकमेलक आदि शामिल है। इन नाटकों के **निर्देशक प्रो. रमाकान्त पाण्डेय** तथा **सह निर्देशक डॉ. राधावल्लभ शर्मा** एवं **दीपक भारद्वाज** थे।

वेणीसंहार नाटक की खूबी यह रही कि इसमें निर्देशक एवं सह–निर्देशकों ने भी क्रमशः भीम, युधिष्ठिर एवं अश्वत्थामा का अभिनय प्रस्तुत किया था। इसी क्रम में **युव–तरंग संस्कृत** नाट्य दल की भी महती भूमिका रही। सम्पूर्ण राजस्थान में अब तक दस से अधिक संस्कृत नाटकों का मंचन इसके द्वारा सम्पन्न हुआ। **दीपक भारद्वाज** के निर्देशन में इन नाटकों का मंचन जयपुर की सांस्कृतिक विरासत को द्योतित करता है। **अनिल मारवाड़ी** तथा **सर्वेश व्यास** जैसे मझें हुए कलाकारों ने अपने अभिनय से सबको मुग्ध कर संस्कृत रंगमंच की दिशा में अभूतपूर्व कार्य किया है। ये दोनों संस्कृत साहित्य एवं नाट्य में अच्छी खासी दिलचस्पी रखते हैं। इससे पूर्व जयपुर के ही **जवाहर–कला–केन्द्र** में प्रो.हरिराम–आचार्य के नेतृत्व में संस्कृत नाटकों का मंचन हुआ। भरतपुर तथा भीलवाड़ा आदि स्थानों में भी संस्कृत नाटकों का मंचन खूब हुआ।

संस्कृत रंगकर्म के लिए मध्यप्रदेश की धरती भी समर्पित रही है। यहाँ भोपाल, सागर, उज्जैन तथा इन्दौर आदि भी इस क्षेत्र में अग्रगण्य रहे हैं। भारत–भवन भोपाल में स्थित रंगकर्म के लिए समर्पित संस्था के रूप में कार्य कर रही है। यह 1982 में स्थापित किया गया था। यहाँ संस्कृत नाटकों का मंचन अत्यधिक सुन्दरता के साथ किया गया है। वहीं दूसरी तरफ केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, भोपाल परिसर के द्वारा भी दशाधिक संस्कृत नाटकों का मंचन हो चुका है। जिनमें त्रिपुरदाह, मत्तविलास, तथा सीताच्छायम् आदि मुख्य हैं। ये सभी नाटक डॉ. सुज्ञान कुमार माहान्ति तथा डॉ. धर्मेन्द्र सिंहदेव के निर्देशन में खेले जा चुके हैं।

सागर में सागर विश्वविद्यालय का संस्कृत विभाग इस दिशा में बहुत महत्त्वपूर्ण एवं प्रशंसनीय कार्य रह रहा है। डॉ. रामजी उपाध्याय से लेकर प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी तक यह कार्य प्रवर्तित होता रहा। वर्तमान में डॉ.नौनिहाल गौतम इस कार्य को बखूबी सँभाल रहे हैं। यहाँ पचास से अधिक संस्कृत नाटकों का मंचन इस बात को पुष्ट एवं प्रमाणित करता है।

उज्जैन में स्थित कालिदास संस्कृत अकादमी, संस्कृत रंगकर्म के लिए बहुत अच्छा कार्य कर रही है। संस्कृत नाटक, संस्कृत को हिन्दी एवं अन्य भाषा में अनूदित नाटकों का मंचन यहाँ किया जाता है। अखिल भारतीय कालिदास समारोह में अब तक 100 से अधिक संस्कृत नाटकों का मंचन हो चुका है।

भोपाल स्थित, **वीणापाणि समिति** द्वारा भी संस्कृत नाटक प्रस्तुत किए जा रहे हैं। **''श्रीनाट्यम्''** संघ इन नाटकों का मंचन करने में तत्परता से संलग्न हैं। इस संस्था से प्रो.धर्मेन्द्र सिंहदेव तथा मनोज मिश्र जुड़े हुए हैं। **''षोडश संस्कार''** नाम से किया गया नाटक खूब प्रचलित हुआ है। इसके अतिरिक्त हिमाचल, उत्तराखण्ड, त्रिपुरा, कर्नाटक आदि राज्यों में भी अनेक संस्थाएँ कार्य कर रही हैं। हिमाचल स्थित हिमाचल संस्कृत अकादमी तथा केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, का वेदव्यास परिसर द्वारा भी दस से अधिक संस्कृत नाटकों का मंचन हो चुका है। जिनमें विद्योत्तमा (पद्मश्री प्रो. अभिराज राजेन्द्र मिश्र द्वारा रचित) बालरामायण, कुहनाभैक्षव, आदि शामिल हैं। इस कार्य में डॉ. राधावल्लभ शर्मा, डॉ. मनोज श्रीमाल, डॉ. पुरुषोत्तम एवं डॉ. श्रीनाथ धर द्विवेदी संलग्न रहे। अगरतला में भी पूर्वोक्त विश्वविद्यालय के द्वारा संस्कृत नाटकों का मंचन किया गया, जिनमें अनारकली आदि शामिल रहे। इस कार्य में डॉ. कृपाशंकर शर्मा, डॉ. जितेन्द्र तिवारी तथा डॉ. मंजु प्रमुख रूप से जुड़े रहे। देवप्रयाग (उत्तराखण्ड) में भी संस्कृत रंगमंच की प्रमुख भूमिका रही। इस प्रकार भारत के विभिन्न नगरों में संस्कृत रंगकर्म प्रचलित है।

15.2.3 सोपानम् –केरल

केरल भारत की सांस्कृतिक नगरी है। कला एवं संस्कृति के प्रति यहाँ अत्यधिक प्रेम है। इसी प्रेम को प्रदर्शित करने तथा संस्कृत रंगमंच के माध्यम से संस्कृत नाटकों में निहित मूल तत्त्वों को मनोरंजन के साथ प्रस्तुत करने के लिए **सोपानम्** नामक संस्था की स्थापना की गई। **सोपानम्** वास्तव में संस्कृत रंगकर्म का सोपान ही है। यह संस्था कला एवं संस्कृति के क्षेत्र में शोध एवं नवीन सम्भावनाओं पर जोर देती हैं। मलयालम और संस्कृत में नाटकों की अभूतपूर्व प्रस्तुति इसका विशेष कार्य रहा है। महाकवि भवभूति के नाटक **उत्तररामचरितम्** का हिन्दी में प्रस्तुतीकरण इसकी विशेषोपलब्धि रही है। श्री उदयन वाजपेयी द्वारा इसका अनुवाद किया गया था। भास के 13 नाटक एवं कालिदास के तीनों नाटकों का मंचन भी इस संस्था के द्वारा किया गया है। **भगवदज्जुकम्, टेम्पेस्ट** (Tempest) और Trojen Women का मलयालम भाषा में मंचन भी इसके द्वारा किया गया है।

ग्रीक ड्रामेटिक कम्पनी Volas (वोलोज) के साथ करार कर रामायण और इलियड पर आधारित **इलियाना** का मंचन भी इसके द्वारा किया गया है। महाकवि एवं नाटककार भास पर चतुर्थ अन्तर्राष्ट्रीय रंगमंच उत्सव, त्रिवेन्द्रम में आयोजित कर इस संस्था ने संस्कृत रंगकर्म के प्रति अपनी अपार श्रद्धा प्रकट की है। **सोपानम्** ने अब तक भारत एवं भारत के बाहर अनेक स्थानों पर सफल प्रस्तुतियाँ की है जिनमें कालिदास अकादमी, उज्जैन, भरत रंग महोत्सव दिल्ली, नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा, दिल्ली, पृथ्वी थियेटर फेस्टिवल, मुम्बई, जापान, कोरिया, पौलेण्ड, ग्रीस आदि देश शामिल हैं।

कवलम नारायण पणिक्कर जैसी महान् विभूति ने इस संस्था की स्थापना की। हनीब तनवीर, विजय तेंदुलकर, रतन थियाम तथा गिरीश कर्नाड जैसे प्रसिद्ध नाटककारों के साथ कार्य करके मलयालम में अनूदित अनेक संस्कृत नाटकों का मंचन किया गया।

सोपानम् के माध्यम से पणिक्कर ने **वाचिक–अभिनय** पर बल दिया। अनेक कार्यशालाएँ इस विषय को लेकर आयोजित की गई।

1964 में संस्थापित यह संस्था **सोपान–संगीत**, मोहिनी अट्टम, आधुनिक परिप्रेक्ष्य में संस्कृत रंगमंच तथा लोक रंगमंच के लिए समर्पित है। इसके द्वारा प्रदर्शित नाटकों की सूची निम्न है –

क्र.सं.	नाटक का नाम	वर्ष	लेखक	निर्देशक
1.	साक्षी (मलयालम)	1964	के.एन.पणिक्कर	कुमार वर्मा एवं डॉ. के.के.पणिक्कर
2.	देवावतार (मलयालम)	1973	के.एन.पणिक्कर	कुमार वर्मा
3.	तिरुवाजिथान (मलयालम)	1974	के.एन.पणिक्कर	मणि अलंचेरी
4.	अवनावनकताम्बा (मलयालम)	1975	के.एन.पणिक्कर	जी.अरविन्दन
5.	भगवदज्जुकम् (मलयालम)	1976	के.एन.पणिक्कर (संस्कृत से अनूदित)	के. एन. पणिक्कर
6.	ओट्टयन (मलयालम)	1977	के.एन.पणिक्कर (संस्कृत से अनूदित)	कुमार वर्मा
7.	मध्यमव्यायोग (संस्कृत)	1979	महाकवि भास	के. एन. पणिक्कर
8.	शाकुन्तलम् (संस्कृत)	1982	महाकवि कालिदास	के. एन. पणिक्कर
9.	विक्रमोर्वशीयम् (संस्कृत)	1982	महाकवि कालिदास	के. एन. पणिक्कर
10.	कर्णभारम् (संस्कृत)	1984	महाकवि भास	के. एन. पणिक्कर
11.	उरुभङ्गम् (संस्कृत)	1987	महाकवि भास	के. एन. पणिक्कर
12.	स्वप्नवासवदत्तम् (संस्कृत)	1993	महाकवि भास	के. एन. पणिक्कर
13.	दूतवाक्यम् (संस्कृत)	1996	महाकवि भास	के. एन. पणिक्कर
14.	विक्रमोर्वशीयम् (संस्कृत)	1996	महाकवि कालिदास	के. एन. पणिक्कर
15.	प्रतिमानाटकम्	1999	महाकवि भास	के. एन. पणिक्कर
16.	चारुदत्तम्	2004	महाकवि भास	के. एन. पणिक्कर
17.	विक्रमोर्वशीयम् (नवीनम्)	2005	महाकवि कालिदास	के. एन. पणिक्कर
18.	मालविकाग्निमित्रम् (संस्कृत)	2006	महाकवि कालिदास	के. एन. पणिक्कर
19.	उत्तररामचरित (हिन्दी)	2007	महाकवि भवभूति	के. एन. पणिक्कर

इसके कलाकारों में शिवकुमार, के.सतीश कुमार, जी.एस.एल. सजीकुमार कोमलन नायर, जी.वी.गिरीशन, एस.अनिल कुमार, गिरिजाकुमारी, जे.मालू, आर.एस.सरिता, जे. एल.साजी, आर.सुरेश कुमार, पी.एस.पी. मणिकटे, पी.गोपीनाथ, सीजा, रघुनाथ, मालू लाल तथा स्मिता मुख्य हैं।

इस प्रकार कवलम नारायण पणिक्कर द्वारा सुवासित यह **सोपान** नाट्यकानन भारतीय रंगमंच की परम्परा एवं विकास के पथ का महत्त्वपूर्ण पड़ाव है। संस्कृत रंगमंच को

आधुनिकता के साथ जोड़ने का सम्पूर्ण श्रेय इस संस्था को जाता है। हम सभी गौरवान्वित है कि संस्कृत रंगमंच इस रूप में आज हमारे समक्ष हैं।

15.2.4 युवतरंग – राजस्थान

राजस्थान की भूमि कला, संस्कृति, रंगमंच तथा कविता के लिए हमेशा समर्पित रही है। संस्कृत नाटकों के प्रदर्शन की सुदीर्घ परम्परा यहाँ रही है। राजा–महाराजाओं के समय से ही यह कार्य प्रायः चलता रहा है। इसी क्रम में **युवतरंग** नामक संस्कृत दल भी उभरकर सामने आया। केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, जयपुर परिसर के पूर्व छात्रों द्वारा गठित यह मंच युवाओं को संस्कृत रंगमंच के लिए प्रेरित एवं अभ्यस्त करता है। इसकी स्थापना के बीज का मंगल सूत्रपात प्रसिद्ध नाटककार प्रो.रमाकान्त पाण्डेय के द्वारा सम्पन्न हुआ। राजस्थानी संस्कृति के मूल तत्त्वों को संस्कृत रंगमंच के साथ तादात्म्य सम्बन्ध से प्रस्तुत करना इस संस्कृत नाट्य दल का मुख्य उद्देश्य है। इनकी प्रस्तुतियों में आहार्य एवं मंच सज्जा इत्यादि में राजस्थानी संस्कृति का पुट अवश्य रहता है। इसकी स्थापना वर्ष 2005 में हुई। डॉ. जानकीवल्लभ शर्मा, श्री सर्वेश व्यास, श्री कान्ताप्रसाद शर्मा, डॉ. नमिता मित्तल तथा प्रो. सुरेन्द्र कुमार शर्मा इत्यादि सुधी जनों के द्वारा पल्लवित एवं पुष्पित यह संस्था सक्रिय रूप से कार्य कर रही है।

प्रारम्भिक वर्ष में मात्र 11 सदस्यों वाले इस दल में 45 सक्रिय कुशल अभिनेता हैं जिनमें श्री दीपक भारद्वाज, श्री संदीप शर्मा, डॉ. फिरोज, डॉ. राधावल्ल्भ शर्मा, श्रीमती अन्तिमबाला इत्यादि मुख्य हैं। अब तक इस संस्था के द्वारा संस्कृत नाटकों की अनेक प्रस्तुतियाँ हो चुकी हैं, जिनमें अभिज्ञानशाकुन्तल, रत्नावली, पलाण्डुमण्डनम्, भगवज्जुकीयम्, मध्यमव्यायोग, वेणीसंहार, प्रतापविजय, प्रतिज्ञा–यौगन्धरायण, कुन्दमाला, मालतीमाधव तथा बालरामायण मुख्य हैं।

भगवज्जुकीय का तो दस से ज्यादा बार देश के विभिन्न स्थानों पर मंचन होना संस्कृत रंगमंच की वैश्विकता का जीता–जागता प्रमाण है। इसके संस्थापक अध्यक्ष श्री दीपक भारद्वाज हैं जो वर्तमान में राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, देवगढ़ (राजसमन्द) में प्रधानाचार्य के पद पर कार्यरत हैं।

दीपक भारद्वाज और संदीप शर्मा के निर्देशकत्व और सहनिर्देशकत्व में यह संस्था निरन्तर संस्कृत रंगमंच को जनप्रिय बनाने के लिए प्रयासरत है।

15.2.5 ज्ञानप्रवाह–वाराणसी

वाराणसी कला एवं संस्कृति की वाहिका नगरी है। शिव के त्रिशूल पर रहने वाली यह पौराणिक नगरी भारत की अस्मिता का जीता–जागता उदाहरण है। कला तो इसके रोम–रोम में समाई हुई है। इसी सांस्कृतिक वैभव को प्रकट करने वाले अनेक संस्थान यहाँ कार्यरत हैं। जिनमें **ज्ञानप्रवाह** भी मुख्य हैं। अपने नाम के सर्वथा अनुरूप यह संस्था काशी की ज्ञानगंगा को अविरल रूप से प्रवाहित करने में संलग्न है। वर्ष 1997 में स्थापित यह संस्था कलकत्ता के निवासी **श्रीमती विमला पोद्दार** के द्वारा भारत के ज्ञान–वैभव को सर्वत्र फैलाने के लिए की गई। संस्कृत नाटकों का अभिनय नूतन–विधि के साथ करना ही इसका मुख्य ध्येय रहा है। वर्ष 2000 में प्रो. कृष्णकान्त शर्मा के निर्देशन में **अभिज्ञानशाकुन्तल** नामक नाटक का मंचन हुआ। जिसमें संगीत, आहार्य एवं प्रस्तुतीकरण पक्ष इतना प्रबल था कि काशी में लोग नाटक देखने की लिप्सा में मग्न हो गए। विशाल स्तर पर इसका मंचन किया गया। सबसे विशेष बात

इसमें यह रही कि इसमें शासन का भी भरपूर सहयोग था। तत्कालीन राज्यपाल विष्णुकान्त शास्त्री इसमें उपस्थित थे। पद्मश्री प्रो. अभिराज राजेन्द्र मिश्र ने इस नाटक को देखकर इसकी भूरि–भूरि प्रशंसा की थी। कालिदास समारोह के द्वारा **विक्रमोर्वशीय** नाटक का मंचन हुआ।

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित प्राच्य संस्कृत सम्मेलन (Oriental Sanskrit Conference) में इसकी रमणीय प्रस्तुति की गई। इसके नाट्य निर्देशक भी प्रो. कृष्णकान्त शर्मा थे। यह नाटक भोपाल के भारत–भवन में भी मंचित हुआ था। प्रो. प्रेमलता शर्मा, प्रो. कमलेशदत्त त्रिपाठी तथा प्रो. शिवि चन्द्रशेखर जैसे नामचीन कलाकारों ने इसमें भूमिका का निर्वाह किया। संगीत नाटक अकादमी की ओर से यह नाटक स्वतन्त्रता–भवन में भी मंचित हुआ। बतौर कलाकार प्रो. कृष्णकान्त शर्मा ने अनेक संस्कृत नाटकों में उद्दाम अभिनय के बलबूते सम्पूर्ण रंगमंच के इतिहास में अपनी धाक जमाई। वर्ष 1974–75 में जब आप आचार्य कक्षा में पढ़ते थे तब **मालविकाग्निमित्र** नाटक में प्रदत्त भूमिका का आपने अभिनय किया। यह नाटक प्रो. विश्वनाथ भट्टाचार्य के निर्देशकत्व में खेला गया। प्रो. कृष्णकान्त शर्मा की अभिनय–प्रतिभा इतनी सम्मोहिनी थी कि दर्शक उन्हें ही देखना चाहते थे। **उत्तररामचरित** में सुमन्त तथा सूत्रधार का अभिनय कर इन्होंने इसका प्रदर्शन भी किया था। **मुद्राराक्षस** में प्रो. कमलेशदत्त त्रिपाठी के साथ–साथ इन्होंने राक्षस की भूमिका का सफलतापूर्वक अभिनय किया। **मालविकाग्निमित्र** में सारथि तथा हरदत्त की भूमिका का अभिनय भी इन्होंने किया। प्रो. कृष्णकान्त शर्मा बहुमुखी प्रतिभा के धनी रहे हैं। नाटकों में अभिनय के साथ–साथ इन्होंने कई नाटकों का निर्देशन भी किया जिनमें मालविकाग्निमित्र तथा चारुदत्त मुख्य हैं। प्रो. कमलेशदत्त त्रिपाठी और इनकी जोड़ी सर्वत्र प्रसिद्ध थी। **चारुदत्त** नाटक में ही इन दोनों ने पारिपार्श्विक की भूमिका का सफलतापूर्वक अभिनय किया।

इस प्रकार यह संस्था भारतीय रंगमंच अथवा संस्कृत रंगमंच के लिए सर्वथा समर्पित भाव से कार्य कर रही है।

15.2.6 कालिदास संस्कृत अकादमी, उज्जैन

उज्जयिनी, उज्जैन अथवा अवन्तिका नगरी का वैशिष्ट्य पुराणों में बहुत्र प्राप्त होता है। महाकाल की यह नगरी प्राचीन काल से ही नाट्य, रंगमंच एवं कला के लिए सम्पूर्ण विश्व में प्रसिद्ध रही है। स्वयं महाकाल नटराज के नाम से जाने जाते हैं। महाकवि कालिदास के जीवन दर्शन तथा साहित्य के संदेशों को जन–जन तक पहुँचाने के लिए इस अकादमी की स्थापना की गई है।

संस्कृत नाटकों का हिन्दी एवं हिन्दीतर भाषाओं में अनुवाद कर उनका प्रस्तुतीकरण करना ही इस अकादमी का उद्देश्य रहा है। नाट्यशास्त्र के अनुकल नाट्यमण्डप बनाकर प्राचीन शैली में संस्कृत नाटकों का मंचन कराना तथा रंगमंचीय गतिविधियों जैसे कार्यशाला, वार्ता, फिल्म तथा कला आदि की प्रस्तुति ही इसका वास्तविक उद्देश्य रहा है।

यह अकादमी नाट्यशास्त्र के नियमों के अनुसार बनायी गयी है। अकादमी के भवन का नाम **नवमांश** तथा **आश्रय** रखा गया है। सबसे दिलचस्प बात यह है कि इसके प्रकोष्ठों के नाम भी कालिदास की रचनाओं को आधार मानकर रखे गए हैं। जैसे –

1. कुमारसम्भवम् – निदेशक–प्रकोष्ठ
2. विक्रमोर्वशीयम् – कार्यालय/संगणक कक्ष
3. अभिज्ञानशाकुन्तलम् – प्रदर्शनी कक्ष
4. रघुवंशम् – शोध संगोष्ठी कक्ष
5. मालविकाग्निमित्रम् – शोध एवं प्रकाशन कक्ष
6. मेघदूतम् – सभा कक्ष
7. ऋतुसंहारम् – सभा कक्ष
8. अभिरंग नाट्यगृह – रंगमंच
9. आचार्यकुल – अध्ययन कक्ष

वर्ष 1978 में इस अकादमी की स्थापना की गई। वर्ष 1979 से इसका कार्य प्रारम्भ हुआ। मध्यप्रदेश शासन के संस्कृति विभाग से संचालित यह अकादमी कमलेशदत्त त्रिपाठी, प्रो. श्रीनिवास रथ, डॉ. कृष्णकान्त चतुर्वेदी, सुप्रसिद्ध कवि डॉ. मिथिला प्रसाद त्रिपाठी तथा डॉ. बलदेवानन्द सागर इत्यादि महनीय एवं गणमान्य विद्वानों से भरपूर रही। कला एवं संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए यह अकादमी प्रतिवर्ष **अखिल भारतीय कालिदास समारोह** का आयोजन करती है। यह समारोह देवप्रबोधिनी एकादशी को प्रारम्भ होकर सात दिनों तक चलता है। इसमें राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठियाँ, व्याख्यानमाला **संस्कृत कवि सम्मेलन** अखिल भारतीय अन्तर्विश्वविद्यालयीय वाद–विवाद प्रतियोगिता, कालिदास के नाटकों का हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषाओं तथा विदेशी भाषाओं में प्रदर्शन, भारत एवं भारत से बाहर कलाकारों द्वारा लोकसंस्कृति से सम्पृक्त नाटकों का मंचन किया जाता है। यह अकादमी निम्नलिखित कार्यक्रमों का भी सफल आयोजन करती है। जिनमें –

1. शास्त्री नृत्य प्रशिक्षण शिविर – उज्जैन
2. ग्रीष्मकालीन प्रशिक्षण शिविर – उज्जैन
3. सारस्वतम् (प्रथम) – रतलाम
4. संस्कृत सम्भाषण शिविर – मध्यप्रदेश के विभिन्न दस जिलों में
5. शास्त्र व्याख्या पाठ सत्र – होशंगाबाद
6. बालनाट्यम् – इन्दौर
7. संस्कृत गौरव दिवस – विदिशा
8. कल्पवल्ली – उज्जैन
9. संस्कृत–नाट्य प्रशिक्षण शिविर – उज्जैन
10. संस्कृत नाट्य समारोह – उज्जैन
11. वाल्मीकि समारोह – चित्रकूट
12. अखिल भारतीय कालिदास समारोह – उज्जैन
13. भवभूति समारोह – ग्वालियर
14. वर्णागम शिविर – महेश्वर
15. सारस्वतम् (द्वितीय) – सागर

16. भर्तृहरि प्रसंग – उज्जैन
17. वनजन महोत्सव – बान्धवगढ़
18. भोज महोत्सव – धर
19. बाणभट्ट समारोह – रेवा
20. शंकर समारोह – ओंकारेश्वर
21. राजशेखर समारोह – जबलपुर

स्वर्गीय पद्मभूषण पं. सूर्यकान्त व्यास ने सर्वप्रथम उज्जैन में कालिदास जयन्ती मनाने की शुरुआत की। इस कार्य में उनको मध्यप्रदेश शासन का भरपूर सहयोग प्राप्त हुआ। तत्कालीन मुख्यमन्त्री स्वर्गीय डॉ. कैलाश नाथ काटजू इस प्रस्ताव से अत्यन्त प्रभावित थे तथा उन्होंने राष्ट्रीय स्तर पर इसे मनाने का फैसला लिया। मध्यप्रदेश कला परिषद् के बैनर तले 1958 में **प्रथम कालिदास समारोह** का आगाज हुआ। रूस, जर्मनी, पोलेण्ड, ईरान तथा चीन आदि देशों के प्रतिनिधियों ने इसमें भाग लिया। परिषद् के द्वारा इस समारोह के अन्तर्गत ही नाटकों के मंचन का कार्य किया गया जिनमें डॉ. वी. राघवन तथा गौरीनाथ शास्त्री ने नाटक में अभिनय भी किया तथा निर्देशन भी किया। कालिदास के जीवन पर आश्रित अनेक हिन्दी नाटकों का भी यहाँ मंचन हुआ। **अभिज्ञान–शाकुन्तल** का एथेन्स के समूह के द्वारा ग्रीक भाषा में तथा ग्रीक नाट्य शैली में अभिनय 12 नवम्बर, 1986 को हुआ। तदनु भास के **अविमारक** का टोक्यो की नाट्यकम्पनी **वासेदा नाट्य कम्पनी** द्वारा जापानी भाषा एवं जापानी शैली में 20 नवम्बर, 1988 को मंचन होना एक अद्भुत कार्य था। 2020 में इस समारोह के अन्तर्गत **कालिदास–साहित्य में वर्णित नायिकाओं** पर आधारित संस्कृत नाटक **दीपशिखा** का मंचन हुआ। डॉ. सतीश दवे के निर्देशन में हिन्दी नाटक **मालविकाग्निमित्र** का मंचन हुआ। 2017 में रूपवाणी, वाराणसी संस्था द्वारा **पंचरात्र का हिन्दी में** मंचन किया गया तथा **कालिदासचरित** नामक हिन्दी नाटक को मालवी शैली में प्रस्तुत किया गया। 2016 में **सोपानम्** द्वारा **अभिज्ञान शाकुन्तल** की सुन्दर प्रस्तुति दी गई तथा **भगवज्जुकम्** की मलयालम में प्रस्तुति की गई। वर्ष 2021 में बुन्देलखण्ड नाट्यकला समिति, झाँसी द्वारा **मालविकाग्निमित्र** की प्रस्तुति दी गई। 2011 में यक्षगान शैली पर आधारित **अभिज्ञानशाकुन्तल** की प्रस्तुति की गई। इस प्रकार विभिन्न निर्देशकों के निर्देशकत्व में कालिदास अकादमी, उज्जैन में विविध संस्कृत नाटकों का मंचन किया गया। यह अकादमी भारतीय रंगमंच एवं भारतीय कलाओं के उन्नयन के लिए निरन्तर कार्य कर रही है।

15.2.7 सागर विश्वविद्यालय, सागर

मध्यप्रदेश की पावन धरती पर सागर में स्थित सागर विश्वविद्यालय एक प्रतिष्ठित संस्था है। न केवल भारत में अपितु विश्व के अनेक देशों में इसकी धाक है। यह धाक ज्ञान के विभिन्न सोपानों का अनूठा प्रयोग करने से हुई है। इस विश्वविद्यालय की स्थापना डॉ. हरिसिंह गौर ने 18 जुलाई 1946 को अपनी पूँजी से की थी। अपनी स्थापना के समय यह भारत का 18वाँ विश्वविद्यालय था। किसी एक व्यक्ति के दान से स्थापित होने वाला यह देश का एकमात्र विश्वविद्यालय है। 27 मार्च, 2008 से इसे केन्द्रीय विश्वविद्यालय की श्रेणी प्रदान की गई है। इस विश्वविद्यालय का संस्कृत विभाग संस्कृत रंगमंच के सदैव समर्पित रहा है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC) ने इस विभाग को 1994 से 2006 तक और फिर जुलाई 2007 से 2012 तक

संस्कृत में महत्वपूर्ण शोध के लिए अधिकृत किया। संस्कृत नाटकों के प्रदर्शन के लिए यह विश्वविद्यालय विगत अनेक वर्षों से कार्य कर रहा है। डॉ. वी.एम.आप्टे, प्रो.रामजी उपाध्याय, प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी, प्रो. कुसुम भूरिया दत्ता, प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी, डॉ. नौनिहाल गौतम, डॉ. रामहेत गौतम, डॉ. संजय कुमार, डॉ. शशि कुमार सिंह और किरण आर्य के निर्देशकत्व में संस्कृत नाटकों की प्रस्तुतियाँ उल्लेखनीय रही है।

कालिदास तथा भास के समस्त नाटकों का मंचन तथा आधुनिक संस्कृत साहित्य के नाटकों का मंचन यहाँ किया गया था।

15.2.8 राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान (केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय) वसन्तोत्सव तथा कौमुदी–महोत्सव

राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान (वर्तमान में केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय) एक बहुपरिसरीय (Multi Campuses) विश्वविद्यालय है। वर्ष 2020 में इसे संसद के विशेष अधिनियम के तहत केन्द्रीय विश्वविद्यालय का दर्जा दिया गया है। प्रो. वेम्पटि कुटुम्ब शास्त्री के सत्संकल्प को पूर्ण करने के लिए यह विश्वविद्यालय प्रत्येक वर्ष **कौमुदी–महोत्सव** का आयोजन करता है। विश्वविद्यालय के समस्त परिसर नई दिल्ली में एकत्रित होकर संस्कृत नाटकों का मंचन करते हैं। सर्वश्रेष्ठ अभिनय करने वाले परिसर को पुरस्कृत किया जाता है। गौरतलब है कि ये परिसर भारत के विभिन्न राज्यों में अवस्थित हैं। वहाँ की लोक–संस्कृति इन नाटकों में खूब दिखाई जाती है। ये सभी नाटक भारत की संस्कृति का प्रतिनिधित्व करते हैं। यह उपक्रम अन्तः परिसरीय संस्कृत नाट्यस्पर्धा के नाम से विख्यात है। वर्ष 2000 से इन नाटकों के मंचन की शुरुआत हुई। इसका सम्पूर्ण श्रेय प्रो. वेम्पटि कुटुम्ब शास्त्री को जाता है। नवम्बर 2007 से यह कौमुदी–महोत्सव के नाम से प्रसिद्ध हुआ। तदनु 2008 से प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी के संरक्षकत्व में इसमें नूतन प्रयोग किए गए। छात्रों के लिए विशिष्ट प्रशिक्षण (Special Training) की व्यवस्था की गई। भोपाल–परिसर में नाट्यशास्त्र अनुसन्धान केन्द्र की स्थापना की गई। कौमुदीमित्रानन्द (प्रकरण) वृषभानुजा (नाटिका) प्रियदर्शिका (नाटिका) तथा अनेक आधुनिक संस्कृत नाटकों का मंचन हुआ। सम्पूर्ण विश्व में यह ऐसा रंगमंच है जहाँ छात्र अपनी अभिनय कुशलता प्रकट करते हैं। पणिक्कर के निर्देशकत्व में भास के नाटकों का कुशल मंचन किया गया। अब तक 160 नाटकों की सफल प्रस्तुतियाँ इस विराट् मंच पर हो चुकी हैं। अधिकांश प्रस्तुतियों के समन्वयक प्रो. रमाकान्त पाण्डेय रहे हैं।

पूर्व में यह **वसन्तोत्सव** के नाम से प्रख्यात था तथा इसकी शुरुआत 3,4 मार्च 2004 से हुई। अब तक प्रदर्शित नाटकों की सूची निम्न है –

प्रथम वसन्तोत्सव (3–4 मार्च, 2004)

डॉ. अम्बेडकर प्रेक्षागृह, आन्ध्र भवन, नई दिल्ली

1. भगवदज्जुकीयम् – गुरुवायुर परिसर, केरल
2. सभिकद्यूतकरम् – भोपाल परिसर, मध्यप्रदेश
3. जागरूको भव – लखनऊ परिसर, उत्तरप्रदेश
4. कर्णभारम् – श्रीराजीव गाँधी परिसर, शृङ्गेरी, कर्नाटक
5. संस्कृतोद्गारम् – रणवीर परिसर, जम्मू
6. मुद्राराक्षसम् – गरली परिसर, हिमाचल प्रदेश

7. अभिज्ञानशाकुन्तमल् – जयपुर परिसर, राजस्थान
8. मदनदहनम् – सदाशिव परिसर, पुरी (उडीसा)

इसमें ''भगवदज्जुकीयम्'' की प्रस्तुति ने दर्शकों का मन मोह लिया।

द्वितीय वसन्तोत्सव 1,2 मार्च 2005
डॉ. कमानी प्रेक्षागृह, नई दिल्ली

1. कर्णाश्वत्थामीयम् – जयपुर परिसर, राजस्थान
2. चारुदत्तम् – श्रीराजीव गाँधी परिसर, शृङ्गेरी, कर्नाटक
3. चम्पकराम – गुरुवायुर परिसर, केरल
4. राष्ट्रं नः प्राणाः – रणवीर परिसर, जम्मू
5. उरुभङ्गम् – गरली परिसर, हिमाचल प्रदेश
6. दूतवाक्यम् – लखनऊ परिसर, उत्तरप्रदेश
7. यमराजकीयम् – के.जे.सौमय्याविद्यापीठपरिसर, मुम्बई (महाराष्ट्र)
8. कृतकौमुदम् – भोपाल परिसर, मध्यप्रदेश

इसमें **कर्णाश्वत्थामीयम्** तथा **चम्पकराम** ने बेहतरीन प्रदर्शन किया। कर्णाश्वथामीयम् के नाट्य निर्देशक प्रो. रमाकान्त पाण्डेय तथा सह निर्देशक डॉ. राधावल्लभ शर्मा थे।

तृतीय वसन्तोत्सव 23–24 फरवरी, 2006
डॉ. कमानी प्रेक्षागृह, नई दिल्ली

1. अश्वत्थामा – राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, मुख्यालय, नई दिल्ली
2. नागानन्दम् – गुरुवायुर परिसर, केरल
3. मध्यमव्यायोग – लखनऊ परिसर, उत्तरप्रदेश
4. मत्तविलासप्रहसनम् – भोपाल परिसर, मध्यप्रदेश
5. दूतघटोत्कचम् – गरली परिसर, हिमाचल प्रदेश
6. अबलासामर्थ्यम् – गङ्गानाथ झा परिसर, प्रयाग, उत्तरप्रदेश
7. मृच्छकटिकम् – श्रीराजीव गाँधी परिसर, शृङ्गेरी, कर्नाटक
8. स्नुषाविजयम् – जयपुर परिसर, जयुपर, राजस्थान
9. देहि पादपल्लवमुदारम् – सदाशिव परिसर, पुरी (उडीसा)
10. भूकैलाशम् – के.जे.सौमय्याविद्यापीठपरिसर, मुम्बई (महाराष्ट्र)
11. सुभद्राहरणम् – रणवीर परिसर, जम्मू

भोपाल परिसर के प्रहसन ''मत्तविलास'' का बेहतरीन अभिनय इसमें प्रस्तुत किया गया। डॉ. सुज्ञान कुमार माहान्ति इसके नाट्य निर्देशक थे।

चतुर्थ वसन्तोत्सव 20–22 फरवरी, 2007

L.T.G. प्रेक्षागृह, नई दिल्ली

1.	दुर्योधनम्	–	राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, मुख्यालय, नई दिल्ली
2.	स्वप्नवासवदत्तम्	–	गुरुवायुर परिसर, केरल
3.	हास्यचूड़ामणि	–	लखनऊ परिसर, उत्तरप्रदेश
4.	प्रतिज्ञाश्वत्थामीयम्	–	भोपाल परिसर, मध्यप्रदेश
5.	राजवैभवम्	–	सदाशिव परिसर, पुरी (उडीसा)
6.	प्रसन्नराघवम्	–	श्रीराजीव गाँधी परिसर, शृङ्गेरी, कर्नाटक
7.	पंचरात्रम्	–	गरली परिसर, हिमाचल प्रदेश
8.	बालचरितम्	–	जयपुर परिसर, जयुपर, राजस्थान
9.	चाणक्यविजयम्	–	रणवीर परिसर, जम्मू
10.	रघुदासस्य पत्रम्	–	गङ्गानाथ झा परिसर, प्रयाग, उत्तरप्रदेश
11.	विक्रमोर्वशीयम्	–	के.जे.सौमय्याविद्यापीठपरिसर, मुम्बई (महाराष्ट्र)

इसमें दुर्योधन, स्वप्नवासवदत्तम् तथा बालभारतम् की प्रस्तुतियाँ रोमांचकारी रही।

पंचम कौमुदी महोत्सव (वसन्तोत्सव से कौमुदी महोत्सव नामकरण)

28–30 नवम्बर, 2007

L.T.G. प्रेक्षागृह, नई दिल्ली

1.	कौरवौरवम्	–	राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, मुख्यालय, नई दिल्ली
2.	अभिषेकनाटकम्	–	श्रीराजीव गाँधी परिसर, शृङ्गेरी, कर्नाटक
3.	मालविकाग्निमित्रम्	–	गुरुवायुर परिसर, केरल
4.	त्रिपुरदाह	–	भोपाल परिसर, मध्यप्रदेश
5.	लटकमेलकम्	–	जयपुर परिसर, जयुपर, राजस्थान
6.	भर्तृहरिनिर्वेदम्	–	सदाशिव परिसर, पुरी (उडीसा)
7.	चण्डकौशिकम्	–	लखनऊ परिसर, उत्तरप्रदेश
8.	कर्पूरमंजरी	–	गरली परिसर, हिमाचल प्रदेश
9.	धूर्तसमागम	–	गङ्गानाथ झा परिसर, प्रयाग, उत्तरप्रदेश
10.	अविमारकम्	–	रणवीर परिसर, जम्मू
11.	मदनकेतुचरितम्	–	के.जे.सौमय्याविद्यापीठपरिसर, मुम्बई (महाराष्ट्र)
12.	यक्षगानम्	–	सुधन्वमोक्ष राजीव गान्धी परिसर, शृंगेरी, कर्नाटक

इस महोत्सव में यक्षगान का संस्कृत शैली में प्रस्तुतीकरण अत्यन्त रोचक एवं प्रशंसनीय रहा।

षष्ठ कौमुदी महोत्सव

24–26 नवम्बर, 2008

L.T.G. प्रेक्षागृह, नई दिल्ली

1. यक्षगानम् – राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, मुख्यालय, नई दिल्ली
2. पंचकल्याणी – गुरुवायुर परिसर, केरल
3. आश्चर्यचूड़ामणि – श्रीराजीव गाँधी परिसर, शृङ्गेरी, कर्नाटक
4. सीताच्छायम् – भोपाल परिसर, मध्यप्रदेश
5. सावित्रीचरितम् – रणवीर परिसर, जम्मू
6. प्रतिज्ञायौगन्धरायणम् – जयपुर परिसर, जयुपर, राजस्थान
7. रत्नावली – गरली परिसर, हिमाचल प्रदेश
8. गौरीदिगम्बरप्रहसनम् – गङ्गानाथ झा परिसर, प्रयाग, उत्तरप्रदेश
9. विवाहविडम्बनम् – लखनऊ परिसर, उत्तरप्रदेश
10. उत्तररामचरितम् – सदाशिव परिसर, पुरी (उडीसा)
11. राष्ट्रं रक्षति रक्षितम् – के.जे.सौमय्याविद्यापीठपरिसर, मुम्बई (महाराष्ट्र)

इस महोत्सव में यक्षगान, आश्चर्यचूड़ामणि, सीताच्छायम्, विवाहविडम्बनम् तथा राष्ट्रं रक्षति रक्षितम् की प्रस्तुतियाँ मनोहर रही। इसके साथ–साथ तत्कालीन कुलपति प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी ने दो आमन्त्रित प्रस्तुतियों को भी इसमें शामिल करवाया जिनमें **मालविकाग्निमित्रम्,** कालिदास संस्कृत अकादमी, उज्जैन तथा **भगवदज्जुकीयम्**, नीपारंगमण्डली, लखनऊ शामिल है।

सप्तम कौमुदी महोत्सव

10–12 नवम्बर, 2009

प्यारेलाल प्रेक्षागृह, नई दिल्ली

1. अभिज्ञानशाकुन्तल (प्रथमांक) – भोपाल परिसर, मध्यप्रदेश
2. प्रतिमानाटकम् – सदाशिव परिसर, पुरी (उडीसा)
3. अभिज्ञानशाकुन्तल (द्वितीयांक) – रणवीर परिसर, जम्मू
4. अभिज्ञानशाकुन्तल (तृतीयांक) – गरली परिसर, हिमाचल प्रदेश
5. अभिज्ञानशाकुन्तल (चतुर्थांक) – श्रीराजीव गाँधी परिसर, शृङ्गेरी, कर्नाटक
6. इन्द्रजालम् – गङ्गानाथ झा परिसर, प्रयाग, उत्तरप्रदेश
7. अभिज्ञानशाकुन्तल (पंचमांक) – लखनऊ परिसर, उत्तरप्रदेश
8. अभिज्ञानशाकुन्तल (षष्ठांक) – गुरुवायुर परिसर, केरल
9. अभिज्ञानशाकुन्तल (सप्तांक) – जयपुर परिसर, जयुपर, राजस्थान

इस महोत्सव में अधोलिखित प्रस्तुतियाँ आमन्त्रित की गई –

1. रासलीला – श्री राधामाधवसंस्कृतमहाविद्यालय, मणिपुर
2. विक्रमोर्वशीय – नाट्य परिषद्, सागर, मध्यप्रदेश

3. कुन्दमाला – श्री कमल वशिष्ठ (प्रसिद्ध रंगकर्मी) की प्रस्तुति

अष्टम कौमुदी महोत्सव

25–27 अक्टूबर, 2010

L.T.G. प्रेक्षागृह, नई दिल्ली

1. कर्णभारम् – गुरुवायुर परिसर, केरल
2. मध्यमव्यायोग – जयपुर परिसर, जयुपर, राजस्थान
3. पंचरात्रम् – के.जे.सौमय्याविद्यापीठपरिसर, मुम्बई (महाराष्ट्र)
4. प्रतिज्ञायौगन्धरायणम् – भोपाल परिसर, मध्यप्रदेश
5. दूतवाक्यम् – गङ्गानाथ झा परिसर, प्रयाग, उत्तरप्रदेश
6. दरिद्रचारुदत्तम् – गरली परिसर, हिमाचल प्रदेश
7. स्वप्नवासवदत्तम् – श्रीराजीव गाँधी परिसर, शृङ्गेरी, कर्नाटक
8. बालचरितम् – सदाशिव परिसर, पुरी (उडीसा)
9. अविमारक – लखनऊ परिसर, उत्तरप्रदेश
10. प्रतिमानाटक – रणवीर परिसर, जम्मू

इस महोत्सव में **दरिद्रचारुदत्त** की प्रस्तुति छात्राओं द्वारा की गई इसमें एक भी छात्र नहीं था, पुरुष पात्र भी छात्राएँ थी। विश्वविद्यालय के इतिहास में यह पहला प्रयोग था। इसके नाट्य निर्देशक प्रो. विजयपाल शास्त्री तथा सहनिर्देशक प्रो. किशोर कुमार दलाई, डॉ. मोहिनी अरोड़ा एवं डॉ. राधावल्लभ शर्मा थे।

नवम कौमुदी महोत्सव

30–01 फरवरी, 2012

L.T.G. प्रेक्षागृह, नई दिल्ली

1. उत्तररामचरितम् – सदाशिव परिसर, पुरी (उडीसा)
2. प्रशान्तराघवम् – गङ्गानाथ झा परिसर, प्रयाग, उत्तरप्रदेश
3. कुन्दमाला – जयपुर परिसर, जयुपर, राजस्थान
4. प्रसन्नराघवम् – भोपाल परिसर, मध्यप्रदेश
5. बालरामायण – रणवीर परिसर, जम्मू
6. अभिषेकनाटक – के.जे.सौमय्याविद्यापीठपरिसर, मुम्बई (महाराष्ट्र)
7. सीताराघवम् – श्रीराजीव गाँधी परिसर, शृङ्गेरी, कर्नाटक
8. प्रतिमानाटक – श्री वेदव्यास परिसर, हिमाचल प्रदेश
9. महावीरचरितम् – लखनऊ परिसर, उत्तरप्रदेश
10. आश्चर्यचूड़ामणि – गुरुवायुर परिसर, केरल

इस महोत्सव में **आश्चर्यचूड़ामणि** की प्रस्तुति विस्मयकारी रही।

दशम नाट्योत्सव

5–7 फरवरी, 2013

L.T.G. प्रेक्षागृह, नई दिल्ली

1.	मुदितकुसुमचन्द्रम्	–	गङ्गानाथ झा परिसर, प्रयाग, उत्तरप्रदेश
2.	मल्लिकामकरन्दम्	–	श्री सदाशिव परिसर, पुरी (उडीसा)
3.	मृच्छकटिकम् (1–2 अंक)	–	श्रीराजीव गाँधी परिसर, शृङ्गेरी, कर्नाटक
4.	मृच्छकटिकम् (3–5 अंक)	–	गुरुवायुर परिसर, केरल
5.	मृच्छकटिकम् (6–7 अंक)	–	श्री वेदव्यास परिसर, हिमाचल प्रदेश
6.	मृच्छकटिकम् (8 अंक)	–	श्री रणवीर परिसर, जम्मू
7.	मृच्छकटिकम् (9,10 अंक)	–	लखनऊ परिसर, उत्तरप्रदेश
8.	मालतीमाधवम्	–	जयपुर परिसर, जयुपर, राजस्थान
9.	कौमुदीमित्रानन्दप्रकरणम्	–	के.जे.सौमय्याविद्यापीठपरिसर, मुम्बई (महाराष्ट्र)
10.	प्रबुद्धरौहिणेयम्	–	भोपाल परिसर, मध्यप्रदेश

एकादश नाट्योत्सव

1–3 फरवरी, 2014

हिन्दू महाविद्यालय, प्रेक्षागृह, नई दिल्ली

1.	प्रमद्वरा	–	गङ्गानाथ झा परिसर, प्रयाग, उत्तरप्रदेश
2.	चन्द्रकला	–	श्री सदाशिव परिसर, पुरी (उडीसा)
3.	वृषभानुजा	–	भोपाल परिसर, मध्यप्रदेश
4.	मृगांकलेखा	–	के.जे.सौमय्याविद्यापीठपरिसर, मुम्बई (महाराष्ट्र)
5.	मणिमंजरी	–	श्री रणवीर परिसर, जम्मू
6.	विद्योत्तमा	–	श्री वेदव्यास परिसर, हिमाचल प्रदेश
7.	अनारकली	–	एकलव्य परिसर, अगरतला, त्रिपुरा
8.	कर्पूरमंजरी	–	श्रीराजीव गाँधी परिसर, शृङ्गेरी, कर्नाटक
9.	प्रियदर्शिका	–	लखनऊ परिसर, उत्तरप्रदेश
10.	रत्नावली	–	जयपुर परिसर, जयुपर, राजस्थान
11.	शृंगारमंजरी	–	गुरुवायुर परिसर, केरल

इस महोत्सव का विशेष आकर्षण नाटिकाओं की सुन्दर प्रस्तुति रही। विद्योत्तमा (पद्मश्री प्रोफे. अभिराज राजेन्द्र मिश्र द्वारा विरचित) अनारकली तथा श्रृंगारमंजरी की प्रस्तुति विद्यार्थियों ने अत्यन्त लगन एवं परिश्रम से की।

द्वादश नाट्योत्सव

4–6 फरवरी, 2015

शंकर लाल कन्सर्ट, प्रेक्षागृह, नई दिल्ली

1.	मुद्राराक्षस (1–3 अंक)	–	गङ्गानाथ झा परिसर, प्रयाग, उत्तरप्रदेश
2.	मुद्राराक्षस (4–7 अंक)	–	गुरुवायुर परिसर, केरल

3. बालभारतम् – श्रीराजीव गाँधी परिसर, शृङ्गेरी, कर्नाटक
4. मालतीमाधवम् (1–3 अंक) – लखनऊ परिसर, उत्तरप्रदेश
5. मालतीमाधवम् (4–7 अंक) – भोपाल परिसर, मध्यप्रदेश
6. मालतीमाधवम् (8–10 अंक) – के.जे.सौमय्याविद्यापीठपरिसर,मुम्बई (महाराष्ट्र)
7. बालभारतम् (1–3 अंक) – श्री वेदव्यास परिसर, हिमाचल प्रदेश
8. बालभारतम् (4–7 अंक) – श्री रणवीर परिसर, जम्मू
9. बालभारतम् (8–10 अंक) – जयपुर परिसर, जयुपर, राजस्थान
10. महावीरचरितम् (1–4 अंक) – श्री सदाशिव परिसर, पुरी (उडीसा)
11. महावीरचरितम् (5–7) – एकलव्य परिसर, अगरतला, त्रिपुरा

त्रयोदश नाट्य महोत्सव

24–26 फरवरी, 2016

डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन्, प्रेक्षागृह, नई दिल्ली

1. लटकमेलकम् – श्री रणवीर परिसर, जम्मू
2. वंचकपंचकम् – एकलव्य परिसर, अगरतला, त्रिपुरा
3. कुहनाभैक्षवम् – श्री वेदव्यास परिसर, हिमाचल प्रदेश
4. मृदंगदासप्रहसनम् – श्री गङ्गानाथ झा परिसर, प्रयाग, उत्तरप्रदेश
5. स्नुषाविजयम् – लखनऊ परिसर, उत्तरप्रदेश
6. हास्यार्णवप्रहसनम् – श्री सदाशिव परिसर, पुरी (उडीसा)
7. पलाण्डुमण्डनम् – जयपुर परिसर, जयुपर, राजस्थान
8. मत्तविलास – गुरुवायुर परिसर, केरल
9. विवाहविडम्बनम् – के.जे.सौमय्याविद्यापीठपरिसर, मुम्बई (महाराष्ट्र)
10. हास्यचूडामणि – भोपाल परिसर, मध्यप्रदेश
11. भगवदज्जुकीयम् – श्रीराजीव गाँधी परिसर, शृङ्गेरी, कर्नाटक

इस नाट्य महोत्सव में **प्रकरणों** का मंचन अत्यन्त खूबसूरती के साथ किया गया।

चतुर्दश नाट्य महोत्सव

27 फरवरी से 1 मार्च, 2017

डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन्, प्रेक्षागृह, नई दिल्ली

1. छत्रपतिसाम्राज्यम् (1–5 अंक)– श्री वेदव्यास परिसर, हिमाचल प्रदेश
2. छत्रपतिसाम्राज्यम् (6–10 अंक)– श्री रणवीर परिसर, जम्मू
3. पण्डितराजीयम् – श्रीराजीव गाँधी परिसर, शृङ्गेरी, कर्नाटक
4. अंगुष्ठदानम् – एकलव्य परिसर, अगरतला, त्रिपुरा
5. लीलाभोजराजम् – श्री गङ्गानाथ झा परिसर, प्रयाग, उत्तरप्रदेश
6. दाम्पत्यकलहम् – श्री रघुनाथ कीर्ति परिसर, देवप्रयाग, उत्तराखण्ड

7. रक्षाबन्धनम् – श्री सदाशिव परिसर, पुरी (उडीसा)
8. मदनमोहनमालवीयकीर्तिमंजरीनाटकम् –लखनऊ परिसर, उत्तरप्रदेश
9. संयोगितास्वयंवरम् – गुरुवायुर परिसर, केरल
10. प्रतापविजयम् – जयपुर परिसर, जयुपर, राजस्थान
11. स्नेहसौवीरम् – के.जे.सौमय्याविद्यापीठपरिसर मुम्बई (महाराष्ट्र)
12. तण्डुलप्रस्थीयम् – भोपाल परिसर, मध्यप्रदेश

पंचदश नाट्य महोत्सव

21–24 नवम्बर, 2017

डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन्, प्रेक्षागृह, नई दिल्ली

1. विख्यातविजयम् – लखनऊ परिसर, उत्तरप्रदेश
2. विवेकानन्दविजयम् – के.जे.सौमय्याविद्यापीठपरिसर, मुम्बई (महाराष्ट्र)
3. सीताराघवम् – गुरुवायुर परिसर, केरल
4. चैतन्यचन्द्रोदयम् – श्री रणवीर परिसर, जम्मू
5. लक्ष्मीमानवेदम् – श्री रघुनाथ कीर्ति परिसर, देवप्रयाग, उत्तराखण्ड
6. बाणहरणम् – श्री सदाशिव परिसर, पुरी (उडीसा)
7. सुभद्राधनंजयम् – श्रीराजीव गाँधी परिसर, शृङ्गेरी, कर्नाटक
8. राघवाभ्युदयम् – एकलव्य परिसर, अगरतला, त्रिपुरा
9. किरातार्जुनीयव्यायोग – जयपुर परिसर, जयुपर, राजस्थान
10. प्रेमपीयूषम् – भोपाल परिसर, भोपाल, मध्यप्रदेश

इसके अतिरिक्त **संस्कृतसप्ताहमहोत्सव–2021** के अन्तर्गत विभिन्न परिसरों द्वारा अधोलिखित नाटकों का प्रदर्शन किया गया।

सुभद्राधनजंयम्, किरातार्जुनीयव्यायोग, नागानन्द, शिखाबन्धनम्, शान्तामंगलम्, तण्डुलप्रस्थीयम् इत्यादि।

इस प्रकार केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, संस्कृत नाटकों के प्रयोगानुशीलन के लिए सदैव तत्पर रहा है।

इसके अलावा **संस्कृत रंग**, वीणापाणि समिति द्वारा संस्थापित **श्रीनाट्यम्** एवं अनेक युवा रंगकर्मी इस दिशा में अच्छा कार्य कर रहे हैं। जिनमें **मनोज मिश्र** ने मृच्छकटिकम्, विद्योत्तमा, स्नेहसौवीरम्, षोडश संस्कार, मालतीमाधवम्, नारदमोहनीयम्, नागमण्डलम्, मृदंगलेखा, कर्णभारम् तथा विश्व सारथी, भारत इत्यादि का निर्देशन किया है। नामचीन रंगकर्मियों के साथ कार्य करने वाले मनोज मिश्र अनेक संस्कृत नाटकों में अभिनय–कौशल से सबको लुभा चुके हैं।

वीणापाणि संस्कृत समिति, भोपाल द्वारा संस्थापित **श्री–नाट्यम्** के द्वारा भी अनेक संस्कृत नाटकों का मंचन हो चुका है। **प्रो. धर्मेन्द्र सिंहदेव** के नेतृत्व में इन नाटकों का प्रदर्शन हो चुका है। जिनमें बुद्धचरितम् तथा सोलह–संस्कार आदि मुख्य हैं।

इस प्रकार संस्कृत रंगमंच निरन्तर विकास क्रम को प्राप्त करता हुआ संस्कृत नाटकों के मंचन के लिए कृतसंकल्पित है।

बोध प्रश्न/अभ्यास प्रश्न

1. कालिदास संस्कृत अकादमी स्थित है –

   (क) जयपुर (ख) रोहतक (ग) रामटेक (घ) उज्जैन

2. रवीन्द्र रंगमंच स्थित है –

   (क) काशी (ख) लखनऊ (ग) जयपुर (घ) शिमला

3. दमन–मंजरी नाटक के रचयिता हैं –

   (क) भवभूति (ख) राधावल्लभ त्रिपाठी (ग) रमाकान्त पाण्डेय (घ) मोहन कवि

4. मिलान करें –

क.	सोपानम्	–	1. मध्यप्रदेश
ख.	सागर विश्वविद्यालय	–	2. दीपक–भारद्वाज
ग.	युव–तरंग	–	3. भोपाल
घ.	वीणापाणि	–	4. कवलम नारायण पणिक्कर

5. रिक्त स्थानों की पूर्ति करें –

   1) ज्ञानप्रवाह नामक संस्था ..... स्थित है।

   2) अखिल भारतीय कालिदास समारोह ..... में होता है।

   3) कौमुदी महोत्सव का आयोजन ..... करता है।

   4) पलाण्डुमण्डनम् एक ..... है।

अभ्यास–प्रश्न

1. केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली द्वारा प्रदर्शित संस्कृत नाटकों के विषय में विस्तार से वर्णन करें।
2. आधुनिक युग में संस्कृत रंगमंच इस विषय पर निबन्ध लिखें।

15.3 सारांश

इस इकाई में आपने आधुनिक युग में संस्कृत रंगमंच के विषय में विस्तार से अध्ययन किया। इसके अन्तर्गत संस्कृत रंगमंच के विविध पक्षों को दृष्टिगत रखते हुए **तार्लेकर** के अविस्मरणीय योगदान को कथमपि भुलाया नहीं जा सकता। प्रायोगिक पक्ष को मजबूत बनाते हुए अभिनय कौशल, संगीत–विधान एवं मंच सज्जा को लेकर इन्होंने संस्कृत रंगमंच को ऊँचाईयाँ प्रदान की। सत्रहवीं शताब्दी से प्रारम्भ होने वाले इस रंगमंच पर अनेक प्रयोग किये गए जिनमें कलकत्ता की **विद्यातोषिणी** नामक संस्था, संगीत नाटक अकादमी, नई दिल्ली में आयोजित विचार गोष्ठी तथा कालिदास संस्कृत अकादमी, उज्जैन का भरपूर सहयोग प्राप्त हुआ। कुडियाट्टम शैली में संस्कृत नाटकों का मंचन इस दिशा में नये युग का सूत्रपात हुआ। कवलम नारायण पणिक्कर तथा कमलेशदत्त त्रिपाठी ने कालिदास के संस्कृत नाटकों का मंचन किया। रतन थियेम जैसे नामचीन रंगकर्मियों ने संस्कृत रंगमंच को विश्वस्तरीय बनाने के लिए कमर तोड़ मेहनत की। मणिपुरी शैली में **कर्णभार** का प्रदर्शन तो अमिट छाप छोड़ गया। इस प्रकार आपने संस्कृत रंगमंच के इतिहास के विषय में विस्तार से जाना।

तदनु वाराणसी, राजस्थान, उज्जयिनी तथा दक्षिण के प्रदेशों के संस्कृत रंगमंच के विषय में आपने जाना। इसके अन्तर्गत वाराणसी में प्रदर्शित होने वाले **सौभद्रहरण** नामक नाटक जो भारतेन्दु नाटक मण्डली ने प्रदर्शित किया था, उसके विषय में पढ़ा। जयपुर के संस्कृत रंगमंच के अन्तर्गत वहाँ के राजा–महाराजाओं द्वारा स्थापित **रामप्रकाश–टाकीज** एवं राजमहलों में स्थापित नाट्यशालाओं पर मंचित होने वाले नाटकों के विषय में आपने अध्ययन किया।

इस प्रसंग में केरल के रंगमंच का संस्कृत रंगमंच को योगदान भुलाया नहीं जा सकता। कथकली एवं कुडियाट्टम शैली से सम्पृक्त होकर संस्कृत नाटकों का आकर्षक प्रस्तुतीकरण विशेष रूप से श्लाघनीय है। भारत के विभिन्न राज्यों में संस्कृत रंगमंच के लिए कार्य कर रही समर्पित संस्थाओं के विषय में भी आने गम्भीरतापूर्वक एवं विस्तार से अध्ययन किया। इसके अन्तर्गत **सोपानम्,** केरल, ज्ञानप्रवाह, वाराणसी, युव–तरंग संस्कृत नाट्य–दल, जयपुर, श्रीनाट्यम्, भोपाल तथा कालिदास संस्कृत अकादमी, उज्जैन का मुख्य योगदान रहा है।

इस सन्दर्भ में केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली के विभिन्न परिसरों द्वारा प्रदर्शित संस्कृत नाटकों का मंचन भी संस्कृत रंगमंच का प्रमुख हिस्सा है। अब तक 160 से अधिक नाटकों का मंचन करने वाली यह संस्था न केवल भारत में अपितु सम्पूर्ण विश्व में इसके लिए विख्यात है। कमल वशिष्ठ, सोनल मानसिंह, हबीब तनवीर, अनिल मारवाड़ी, मनोज मिश्रा, राधावल्लभ त्रिपाठी, कमलेश दत्त त्रिपाठी, के.एस. राजेन्द्रन, नवदीप कौर, पणिक्कर, शान्ता गांगुली तथा राजेन्द्र अवस्थी जैसे महनीय रंगकर्मियों ने संस्कृत रंगमंच को वैश्विक धरातल पर लाने के लिए अथक प्रयास किया। इस प्रकार इस इकाई में आपने संस्कृत रंगमंच के विविध पक्षों को समेकित रूप में जाना एवं समझा।

15.4 शब्दावली

1. त्रिपुरदाह – एक प्रकार का भाण ।
2. विद्योत्तमा – पद्मश्री प्रो. अभिराज राजेन्द्र मिश्र द्वारा विरचित एक नाटिका
3. नवमांश – कालिदास संस्कृत अकादमी, उज्जैन के मुख्य भवन का नाम।
4. बाणभट्ट समारोह – रेवा (मध्यप्रदेश) में वार्षिक आयोजन।
5. प्रो. वेम्पटि कुटुम्ब शास्त्री – राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान के पूर्व निदेशक
6. नाट्यशास्त्र अनुसन्धान केन्द्र – भोपाल में स्थित।
7. चम्पकराम – प्रसिद्ध संस्कृत प्रकरण।
8. वोलोस थियेटर समूह – ग्रीक का प्रसिद्ध नाट्य रंगमंच।

15.5 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1. जयपुर की संस्कृत साहित्य को देन – डॉ. प्रभाकर शास्त्री, शरण बुक डिपो, रामगंज चौपड़, जयपुर।
2. प्रतिस्पन्द – प्रो. रमाकान्त पाण्डेय, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली।
3. भारतीय तथा पाश्चात्त्य रंगमंच, सीताराम चतुर्वेदी, हिन्दी समिति, लखनऊ, 1964

4. रंगमंच – कला और दृष्टि, डॉ. गोविन्द पाठक, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली।
5. भारतीय रंगमंच का विवेचनात्मक इतिहास, डॉ. अज्ञात, पुस्तक संस्थान, कानपुर।
6. नाट्यम् (पत्रिका) – नाट्य परिषद्, सागर विश्वविद्यालय, सागर, मध्यप्रदेश।

15.6 बोध/अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न

1. क) जयपुर
2. ग) जयपुर
3. घ) मोहन कवि
4. क–4, ख–1, ग–2, घ–3
5. (i) वाराणसी (ii) उज्जैन (iii) केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली (iv) प्रकरण।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY